सत्यमेव जयते

उन्नति पत्रिका

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

ग्यारहवाँ संस्करण

वर्ष - 2023

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखाविभाग

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय

दक्षिण पश्चिम रेल्वे, हुब्बल्ली कर्नाटक- 580023

चित्रदुर्ग किला, कर्नाटक

"उन्नति"

(ग्यारहवां संस्करण) वर्ष-2023

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय

दक्षिण पश्चिम रेलवे हुब्बल्ली

संरक्षक	:	श्री आर. नरेश, महानिदेशक लेखापरीक्षा
उप संरक्षक	:	श्री एम. दिनेश नाईका, निदेशक लेखापरीक्षा
वरिष्ठ संपादक	:	श्री डी. एम. महांतेश, व. लेखापरीक्षा अधिकारी श्री एस. श्रीकांत, व. लेखापरीक्षा अधिकारी
सह संपादन एवं छायाचित्र	:	श्री राजेश प्रियदर्शी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
तकनीकी सहयोग	:	श्री राजेश प्रियदर्शी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी श्रीमती बी. ब्रिजिता, कनिष्ठ अनुवादक

शुभकामना संदेश

वर्ष 2023 में 'उन्नति' पत्रिका के ग्यारहवां संस्करण को प्रकाशित करने में मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। इस कार्यालय ने राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित सभी लक्ष्यों को सुचारु रुप से प्राप्त करने का प्रयास किया है। इस कार्यालय के अधिकारीयों एवं कर्मचारियों ने हिन्दी कार्यान्वयन को महत्व दिया एवं अपने लेखों को प्रस्तुत किया और हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिता में भाग लिया। आशा है कि इस पत्रिका के विमोचन से समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी प्रेरित होंगे और 'उन्नति' पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त होगा।

आर नरेश

(आर. नरेश)
महानिदेशक लेखापरीक्षा

निदेशक लेखापरीक्षा की कलम से।।।।।।।।।।।

‘उन्नति’ पत्रिका का विमोचन हिन्दी भाषा को राष्ट्रव्यापी बनाने की ओर एक सराहनीय कदम है। हिन्दी भाषा एक ऐसा माध्यम है, जो पूरे देश को एक कड़ी में पिरो सकती है। हमारे कार्यालय के हर एक कर्मचारी एवं अधिकारी, जिन्होंने अपनी मेहनत और लगन से इस पत्रिका को सफल बनाने में अपना योगदान दिया है, उन सबको मैं बधाई देता हूँ। क्योंकि यह पत्रिका एक सामूहिक प्रयास का ही परिणाम है। मैं आशा करता हूँ, कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी ‘उन्नति’ पत्रिका का ग्यारहवां संस्करण सफल हो।

(एम. दिनेश नाईका)
निदेशक लेखापरीक्षा

संपादकीय ||||||||

यह हमारे लिए बहुत ही हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय की हिन्दी पत्रिका ‘उन्नति’ का **ग्यारहवां** संस्करण प्रकाशित हो रहा है। इससे हमारे कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने लेखों द्वारा अपने विचारों को व्यक्त करने का मौका मिलता है। इस पत्रिका को सफल बनाने में हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की अहम भूमिका रही है। अतः उन सबको मैं बहुत बधाई देता हूँ और ‘उन्नति’ पत्रिका के **ग्यारहवां** संस्करण की सफलता की कामना करता हूँ।

(डी. एम. महांतेश)

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन

<u>नोट</u> - **पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबन्धित लेखकों के हैं। संपादक मण्डल एवं कार्यालय का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। प्रकाशित रचनाओं के संबंध में किसी भी विवाद का उत्तरदायित्व भी रचनाकारों का ही होगा।**

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ
1.	'वन IA&AD वन सिस्टम' (OIOS)	एस.श्रीकांत	09
2.	महिला सशक्तिकरण	के.रामबाबू	11
3.	कर्नाटक राज्य की प्रमुख मिठाइयाँ	संजीत कुमार झा	12
4.	हुबली के पास ऐतिहासिक शहर लक्कुंडी (एक परिचय)	राकेश कुमार	14
5.	रामेश्वरम और मीनाक्षी मंदिर की यात्रा का अनुभव	शैलेंदर प्रजापति	16
6.	लेखापरीक्षा प्रक्रिया और लेखापरीक्षकों पर प्रौद्योगिकी का प्रभाव	टी.सुदर्शन रेड्ड़ी	19
7.	जीवन का सीख	पाम्पा बिस्वास	20
8.	अंबोली	पीयूष पपनेजा	21
9.	चैट-जीपीटी (CHAT GPT)	शुभम गौड़	22
10.	शिक्षा की पहचान	रागिनी सिंह	24
11.	सच्चा प्रेम या स्वार्थ।	विपिन कुमार	25
12.	दृष्टिकोण	टी.वेंकट रथनैय्या	26
13.	आशावादी कविता	एम. मनु	27
14.	विश्वासघातक वृक्ष	पंकज ढुल	28
15.	असफलता से भी सीखने की कोशिश	बी. ब्रिजिता	29

हिंदी पखवाड़ा 2023 के दौरान महानिदेशक लेखापरीक्षा द.प.रे., हुब्बल्ली के द्वारा दीप प्रज्वलन

हिंदी पखवाड़ा 2023 के दौरान निदेशक लेखापरीक्षा द.प.रे., हुब्बल्ली के द्वारा दीप प्रज्वलन

हिन्दी पखवाड़ा समारोह -2023

हिन्दी पखवाड़ा समारोह -2023

'वन IA&AD वन सिस्टम' (OIOS)

अतीत में क्षेत्रीय लेखापरीक्षा कार्यालयों ने ऑडिट प्रक्रिया को स्वचालित करने में सहायता के लिए आईटी सिस्टम विकसित करने की पहल की है । इन प्रणालियों ने इच्छित उद्देश्यों की पूर्ति की, लेकिन प्रयासों को बढ़ाया नहीं जा सका। ऑडिटी का माहौल बदल रहा है, और बेहतर जानकारी तथा ऑडिट के सभी चरणों में सहायता के लिए आईटी सिस्टम की आवश्यकता है |

'वन IA&AD वन सिस्टम' (OIOS) परियोजना का उद्देश्य IA&AD की ऑडिट गतिविधियों के संबंध में सच्चाई का एकल स्रोत बनाना है। IA&AD ने कई आईटी एप्लिकेशन देखे हैं जो इस संबंध में एक या अधिक कार्यालयों की जरूरतों को पूरा करते हैं। OIOS विभिन्न आईटी अनुप्रयोगों की सर्वोत्तम प्रथाओं को एक एकल उद्यम-व्यापी आईटी अनुप्रयोग में एक साथ लाएगा।

लेखापरीक्षा प्रक्रिया प्रबंधन प्रणाली (APMS)

यह रिकॉर्ड की प्राथमिक प्रणाली है | ऑडिट योजना और डिज़ाइन से लेकर ऑडिट निष्पादन के जारी करने तक, निरीक्षण रिपोर्टों की अनुवर्ती कार्रवाई से लेकर लेखापरीक्षा को अंतिम रूप देना , रिपोर्ट और अन्य लेखापरीक्षा उत्पाद- सभी इस प्रणाली के अंतर्गत है| यह सभी के लिए एक समान प्रारूप में सुसंगत, विश्वसनीय डेटा सुनिश्चित करेगा |

लेखापरीक्षा ज्ञान प्रबंधन प्रणाली (KMS)

इसके अंतर्गत विनियम, लेखापरीक्षा मानक, ऑडिटिंग दिशानिर्देश; मार्गदर्शी नोट, अभ्यास मार्गदर्शिकाएँ, मैनुअल और सहायक निर्देश है | यह ऑडिट चेकलिस्ट का भंडार है जिसको विभिन्न फील्ड ऑडिट कार्यालयों, जैसा उचित हो, अनुकूलन और उपयोग कर सकते है|

संगठन (Organisation)

OIOS में संगठन मॉड्यूल IA&AD में कार्यालयों की एक मास्टर सूची और उनके रिपोर्टिंग पदानुक्रम को बनाए रखने में सहायता करेगा। यह पदों और संबंधित जिम्मेदारियों सहित कार्यालय की आंतरिक संरचना को बनाए रखने में भी सहायता करेगा।

कार्मिक (Personnel)

IA&AD के कर्मचारियों से संबंधित मास्टर डेटा को OIOS में बनाए रखने की परिकल्पना की गई है। प्रत्येक कर्मचारी के पास एक अद्‌वितीय कर्मचारी आईडी होती है और वह किसी भी समय एक विशेष पद पर कार्य करता है।

ऑडिटी यूनिवर्स (Auditee Universe)

IA&AD का ऑडिटी यूनिवर्स केंद्र सरकार और राज्य/केंद्रशासित प्रदेश सरकारों की सभी संस्थाओं का समूह है जो भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक के ऑडिट क्षेत्राधिकार के अंतर्गत आते हैं, जैसा कि C&AG, DPC अधिनियम, 1971 में प्राधिकरण द्‌वारा परिभाषित किया गया है। यह मॉड्यूल पदानुक्रम के साथ ऑडिटी संस्थाओं के बारे में बुनियादी जानकारी बनाए रखने में मदद करता है ।

प्रौद्‌योगिकी और सोर्सिंग

- वेब सक्षम, क्लाउड आधारित और खुला स्रोत
- ऑफ़लाइन कार्यक्षमता जहां इंटरनेट कनेक्टिविटी खराब/न के बराबर है, इंटरनेट से कनेक्ट होने पर ऑटो सिंक के साथ
- मोबाइल एप्लिकेशन- सहायक दस्तावेज़ की स्कैनिंग
- लेखापरीक्षा कार्यालयों में व्यापक आईटी प्रणाली
- कहीं से भी और सभी प्रकार के उपकरणों तक पहुंच योग्य
- स्टाफ सदस्यों के लिए सुलभ

अंततः OIOS विभिन्न आईटी अनुप्रयोगों की सर्वोत्तम प्रथाओं को एक एकल उद्‌यम-व्यापी आईटी अनुप्रयोग में एक साथ लेकर आया है । इस आईटी एप्लिकेशन को इस तरह से डिज़ाइन किया गया है कि इसे IA&AD में किसी भी ऑडिट कार्यालय द्‌वारा कॉन्फ़िगर और उपयोग किया जा सकता है ।

श्रीकांत एस
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

महिला सशक्तिकरण

महिला सशक्तिकरण एक महत्वपूर्ण सामाजिक प्रयास है जिसका उद्देश्य महिलाओं को समाज में उनकी सही स्थिति और पहचान प्राप्त करने में मदद करना है। यह न केवल उनके व्यक्तिगत विकास को संभावित करता है, बल्कि समाज के समृद्धि और विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। महिला सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक माध्यमों के माध्यम से सक्षम बनाना ताकि वे अपने अधिकारों का उपयोग कर सकें और समाज में अपनी भूमिका का सही से निर्वहन कर सकें।

महिला सशक्तिकरण के माध्यम:

1. शिक्षा: शिक्षा महिलाओं के विकास का महत्वपूर्ण स्तंभ है। शिक्षित महिलाएं समाज में अपनी आवश्यकताओं के बारे में जागरूक होती हैं और उन्हें अपने अधिकारों की रक्षा करने का साहस मिलता है।
2. रोज़गार: महिलाओं को रोज़गार के माध्यम से सशक्त बनाने के लिए सरकार को नौकरियों के क्षेत्र में उन्हें समानता के साथ मौके प्रदान करने चाहिए।
3. सामाजिक सुरक्षा: समाज में महिलाओं की सुरक्षा का परिप्रेक्ष्य बदलना आवश्यक है। समाज को महिलाओं की सुरक्षा के प्रति जागरूक होना चाहिए और उन्हें हर प्रकार के हिंसा और शोषण से बचाने के उपायों को समझना चाहिए।
4. नेतृत्व: महिलाओं को नेतृत्व के क्षेत्र में भी समान अवसर मिलने चाहिए। उन्हें नेतृत्व की भूमिका में समर्थन और प्रोत्साहन देने से समाज में समानता की भावना बढ़ती है।

महिला सशक्तिकरण के लाभ:

1. समाज में समानता: महिला सशक्तिकरण से समाज में समानता की भावना मजबूत होती है, जिससे समाज का सामाजिक और आर्थिक विकास सही दिशा में बढ़ता है।
2. परिवार का समृद्धि: महिला सशक्तिकरण से परिवार का समृद्धि होता है, क्योंकि सशक्त महिलाएं परिवार के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
3. आर्थिक स्वतंत्रता: महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने का अवसर मिलता है, जिससे उन्हें अपने आर्थिक लक्ष्यों की प्राप्ति होती है|

के.रामबाबू
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कर्नाटक राज्य की प्रमुख मिठाइयाँ

कर्नाटक राज्य में कई प्रकार की मिठाईयाँ बनती हैं जो वहाँ की स्थानीय परंपराओं और भोजन संस्कृति को प्रकट करती हैं। यहाँ कुछ प्रमुख कर्नाटकी मिठाइयाँ हैं:

1. **मैसूर पाक:** यह कर्नाटक की प्रमुख मिठाइयों में से एक है और मैसूर शहर का प्रतीक मिठाई माना जाता है। यह चिकनी और क्रिस्पी मिठाई होती है जिसमें बेसन, घी, और चीनी का मिश्रण बनाया जाता है।

मैसूर पाक की उत्पत्ति के बारे में एक प्रसिद्ध किस्सा है: मैसूर पाक का नाम निश्चित रूप से मैसूर शहर के आस-पास के एक ब्रिटिश वायसरॉय लॉर्ड मैसूर के डी. नायडू के नाम पर रखा गया है। डी. नायडू अपने घर पर बनाने वाली एक कुशल रसोईया थी और उन्होंने अपनी रसोई में एक नयी मिठाई बनाई, जिसे बहुत ही स्वादिष्ट माना गया।

1885 के आस-पास, मैसूर के महाराजा श्री चामराज वादियार ने अपने दरबार में डी. नायडू की बनाई हुई मिठाई का स्वाद चखा और बहुत ही प्रभावित हुए। महाराजा ने इस मिठाई को राजभवन के रसोईघर में बनाने के लिए कहा और बाद में इसे "मैसूर पाक" के नाम से जाना गया।

2. **धारवाड़ पेड़ा:** बेहतरीन कर्नाटक मिठाइयों में से एक, धारवाड़ पेड़ा, पाक उत्कृष्टता के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है, जो अपने असाधारण स्वाद, मखमली बनावट और पीढ़ियों तक फैली विरासत के लिए प्रसिद्ध है।

यह एक अनोखे तरीके से बनाई गई उत्तरी कर्नाटक के धारवाड़ शहर की पेड़ा या मिठाई रेसिपी है। आमतौर पर ये पनीर और दूध के साथ पारंपरिक क्रीमी सफ़ेद रंग के मावा या खोया पेड़ा की तुलना में अनोखे भूरे रंग के साथ बनाया जाता है। धारवाड़ पेड़ा रेसिपी को परोसने से पहले चीनी में लपेटा जाता है, जोकि इसे अनोखा बनाता है।

3. **कोब्बरी मिठाई:** कोब्बारी मिठाई, जिसे नारियल बर्फी के नाम से भी जाना जाता है, कर्नाटक की एक पारंपरिक मिठाई है जो ताजा कसा हुआ नारियल, चीनी और थोड़ी सी इलायची के साथ बनाई जाती है, जो मिठास और सुगंधित स्वाद का एक सुखद संयोजन पेश करती है।

4. होलीगे: "होलीगे" एक प्रसिद्ध कर्नाटकी मिठाई है, जिसे अन्य नामों पर भी जाना जाता है, जैसे कि "पूरण पोली" या "ऑब्बट्टु" (Obbattu) कर्नाटक राज्य में। इसकी उत्पत्ति और इतिहास के बारे में निम्नलिखित जानकारी है:

"होलीगे" की उत्पत्ति बहुत पुराने समय से जुड़ी हुई है और यह एक प्रमुख दक्षिण भारतीय मिठाई है, जो खासतर स्पेशल अवसरों और त्योहारों पर बनाई जाती है।

"होलीगे" बनाने के लिए मुख्यत: चना दाल और जागरी (गुड़) का मिश्रण इस्तेमाल होता है। चना दाल को पकाकर पीस लिया जाता है और फिर इसे जागरी के साथ मिलाकर एक मिश्रण बनाया जाता है, जिसे "पूरण" कहा जाता है।

फिर इस पूरण को तिल (सफेद या काली) या मैदा से बनी छोटी परतों में बंद करके बेलकर एक गोली या पतली रोटी की तरह बनाई जाती है।

"होलीगे" का स्वाद बेहद मजेदार होता है और यह दक्षिण भारतीय खाने की परंपराओं का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह आमतौर पर त्योहारों और स्पेशल अवसरों पर बनाई जाती है और लोग इसका आनंद उठाते हैं। यह एक मिठी और स्वादिष्ट मिठाई होती है जो खासतर सर्दियों में पसंद की जाती है।

5. अन्ना पायसम: यह एक प्रमुख कर्नाटकी कीर या खीर है जिसमें चावल, दूध, और चीनी का मिश्रण होता है। यह एक परंपरागत और स्वादिष्ट मिठाई है जो विशेष अवसरों और त्योहारों पर बनाई जाती है।

"अन्ना पायसम" की उत्पत्ति बहुत पुराने समय से जुड़ी हुई है और यह दक्षिण भारतीय खाने की परंपराओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

ये कुछ कर्नाटक की प्रमुख मिठाइयाँ हैं जो वहाँ की विविधता और स्वाद को प्रकट करती हैं।

संजीत कुमार झा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हुबली के पास ऐतिहासिक शहर लक्कुंडी (एक परिचय)

हुबली से लगभग 70 किलोमीटर की दूरी पर एक पुराना शहर है लक्कुंडी, जिसे लोक्कुगुंडी भी कहा जाता है, 14वीं शताब्दी से पहले एक प्रमुख शहर था, और अब यह भारत के कर्नाटक के गडग जिले में एक गांव है। 10वीं शताब्दी तक, यह पहले से ही दक्षिण भारत के लिए टकसाल संचालन वाला एक प्रमुख आर्थिक और वाणिज्य केंद्र था, जिसका उल्लेख कन्नड़ और संस्कृत शिलालेखों और ग्रंथों में किया गया है।

12वीं शताब्दी तक, बावड़ियों और जलाशयों जैसे सार्वजनिक बुनियादी ढांचे के साथ-साथ यहां कई हिंदू और जैन मंदिरों की प्रतिष्ठा की गई थी। प्रमुख मंदिरों में ब्रहमा जिनालय (सबसे पुराना), मल्लिकार्जुन, लक्ष्मीनारायण, मणिकेश्वर, नागनाथ, कुंभेश्वर, नन्नेश्वर, सोमेश्वर, नारायण, नीलकंठेश्वर, कासिविसेश्वर (सबसे परिष्कृत, अलंकृत), वीरभद्र, विरुपाक्ष और अन्य शामिल हैं। जैसे-जैसे इसका महत्व और धन बढ़ता गया, लक्कुंडी होयसला साम्राज्य की राजधानियों में से एक बन गया।

14वीं शताब्दी में, शहर को इस्लामिक सल्तनतों द्वारा निशाना बनाया गया था क्योंकि वे दक्षिण भारतीय हिंदू राज्यों पर लूट और राजनीतिक प्रभुत्व चाहते थे। लक्कुंडी गांव में 50 से अधिक मंदिर खंडहर हैं, जिनमें से कई खराब स्थिति में हैं और चमगादड़ों का निवास है। हालाँकि, प्रमुख मंदिरों का जीर्णोद्धार कर दिया गया है और अब उनका रखरखाव भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) द्वारा किया जाता है। लक्कुंडी कल्याण चालुक्य युग की हिंदू वास्तुकला के अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र है, जिसे वास्तुकारों और शिल्पकारों के "लक्कुंडी-स्कूल" के रूप में जानते है।

9वीं सदी के ब्रिटिश पुरातत्वविदों ने लक्कुंडी को फिर से खोजने और भारतीय कला इतिहास में इसके महत्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लक्कुंडी के खंडहर अब संग्रहालयों में भारतीय कला के इतिहास को उजागर करते हैं, कुछ खंडहर एक स्थानीय मूर्तिकला गैलरी (संग्रहालय) और मंदिरों के पास शेड में प्रदर्शित हैं। हिंदू और जैन स्मारकों के अलावा, ज़िंदेशाह वली को समर्पित एक मुस्लिम दरगाह भी लक्कुंडी में पाई जाती है। यह स्थल अपनी समृद्ध ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत के कारण दुनिया भर से पर्यटकों को आकर्षित करता है।

वर्तमान में इस स्थान की देखरेख ए एस आई द्वारा की जाती है। लेकिन, लोगों के बीच इस जगह के बारे में जानकारी पर्याप्त नहीं है। इसलिए, इस स्थान के बारे में जानकारी को सार्वजनिक महत्व के विभिन्न स्थानों पर चित्रित करने की आवश्यकता है,जिससे इस क्षेत्र में पर्यटन का विकास किया जा सकता है

राकेश कुमार

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

रामेश्वरम और मीनाक्षी मंदिर की यात्रा का अनुभव

हाल ही में मुझे तमिलनाडु राज्य के रामेश्वरम और_मीनाक्षी मंदिर के दर्शन करने का मौका मिला। 2022 में प्रत्येक शनिवार को हुबली से रामेश्वरम तक साप्ताहिक सीधी विशेष ट्रेन चलाई गई। ट्रेन का परिचालन फिलहाल रोक दिया गया है मुझे क्रिसमस की छुट्टियों के आसपास दिसंबर 2022 के महीने के दौरान आरक्षण मिला। यह मेरे लिए यात्रा का एकदम सही समय था क्योंकि शीतकालीन छुट्टियों के कारण स्कूल भी बंद थे। आवास के लिए कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ा, क्योंकि जब मैंने यात्रा की योजना बनाई तो मैंने निजी आवास बुक नहीं किया था, यह सोचकर कि शायद मुझे कोई सरकारी विश्राम गृह मिल जाएगा। हालाँकि, शीतकालीन अवकाश के कारण उस समय होटलों में भी आवास मिलना कठिन लग रहा था। भगवान की कृपा और मित्र की मदद से मैंने रामेश्वरम और मदुरै में आवास बुक किया, जिसके लिए मैंने सामान्य दरों से अधिक दरों का भुगतान किया। अतः मैंने खुद को सलाह दी कि मैं भविष्य में आवास पहले से बुक करूंगा। ट्रेन को रामनाथपुरम स्टेशन पर समाप्त कर दिया गया और वहां से यात्रियों को बसों द्वारा रामेश्वरम तक ले जाया गया। एक अच्छी बात यह थी कि होटल मंदिर के बहुत करीब था। होटल पहुंचने के बाद हमने दर्शन के लिए जाने का फैसला किया क्योंकि मंदिर के गर्भगृह में प्रवेश करने से पहले कुछ नियमों का पालन करना होता है।

रामेश्वरम मंदिर को रामनाथ स्वामी मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। इस मंदिर में स्थापित शिवलिंग, बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक माना जाता है। जिस तरह से उत्तर भारत में काशी का महत्व है, ठीक उसी तरह दक्षिण भारत में रामेश्वरम का भी महत्व है। यह मंदिर एक हजार फुट लंबा और 650 फुट चौड़ा है। रामेश्वरम का गलियारा विश्व का सबसे लंबा गलियारा है। यह उत्तर-दक्षिणमें 197 मीटर एवं पूर्व-पश्चिम 133 मीटर है। इसके परकोटे की चौड़ाई छह मीटर एवं ऊंचाई नौ मीटर है। मंदिर के प्रवेशद्वार का गोपुरम

38.4 मीटर ऊंचा है। यह मंदिर लगभग छह हेक्टेयर में बना हुआ है।रामेश्वरम मंदिर के अंदर 22 तीर्थ हैं, जो अपने आप में प्रसिद्ध हैं। मंदिर के पहले और सबसे मुख्य तीर्थ को अग्नि तीर्थं नाम से जाना जाता है। इन तीर्थों से स्नान के पश्चात ही मंदिर के गर्भ गृह में प्रवेश किया जाता है।

रामेश्वरम मंदिर का प्रवेश द्वार भारतीय निर्माण कला का एक आकर्षक नमूना है। मंदिर में सैकड़ों विशाल खंभे हैं और प्रत्येक खंभे पर अलग अलग तरह की बारीक कलाकृतियां बनी है। इस मंदिर का निर्माण द्रविड़ स्थापत्य शैली में किया गया है। मंदिर में लिंगम के रूप में प्रमुख देवता रामनाथस्वामी यानि शिव को माना जाता है। मंदिर के गर्भगृह में दो लिंग हैं, एक सीता द्वारा रेत से निर्मित जिन्हें कि मुख्य देवता माना जाता है और इन्हें रामलिंगम नाम दिया गया है। जबकि दूसरा लिंग हनुमान द्वारा कैलाश पर्वत से लाया गया, जिसे विश्वलिंगम के नाम से जाना जाता है।

रामेश्वरम मंदिर को सुबह पांच बजे श्रद्धालुओं के लिए खोल दिया जाता है। श्रद्धालु पहले पहर में सुबह पांच बजे से लेकर दोपहर एक बजे तक दर्शन पूजन कर सकते हैं। ठीक एक बजे मंदिर को बंद कर दिया जाता है। इसके बाद दूसरे पहर में शाम तीन बजे मंदिर दोबारा खोला जाता है। इस पहर में शाम तीन बजे से रात के नौ बजे तक दर्शन किया जा सकता है।

सभी तीर्थों में स्नान के पश्चात हमने मंदिर के गर्भ गृह में दूसरे प्रहर में प्रवेश किया और पूजा अर्चना की। रामेश्वरम में हमारा प्रवास केवल एक दिन के लिए था और हमने अपने दिन का भरपूर आनंद लिया।

अगली सुबह हम बस से मीनाक्षी अम्मन मंदिर, मदुरै के लिए रवाना हुए। रामेश्वरम से मदुरै तक की सड़क बहुत अच्छी है। हालाँकि, तापमान ऐसा था मानो हम मई के महीने में भारत के उत्तरी भाग में यात्रा कर रहे हों। मदुरै पहुँचने में लगभग 4 घंटे लगे। चूंकि हम यात्रा और गर्मी के कारण थक गए थे, इसलिए हमने होटल में रुकने का फैसला किया। यहां भी हमें मंदिर के पास ही होटल मिल गया। यह लगभग 900 मीटर की पैदल दूरी पर था। अगली सुबह हम मंदिर में दर्शन करने गये। हालाँकि, सुबह के 9 बजे थे, हमें दिसंबर के महीने की गर्मी का एहसास हो रहा था। कुछ ही मिनटों में हम मंदिर पहुँच गये। मंदिर के अंदर कोई भी बैग (पर्स को छोड़कर), मोबाइल आदि ले जाने की अनुमति नहीं है। सभी जांचों से गुजरने के बाद हमने मंदिर में प्रवेश किया। इस समय मुझे अपने महानिदेशक लेखापरीक्षा श्री आर. नरेश जी की सलाह याद आई जिन्होंने मुझसे कहा था कि मंदिर में प्रवेश के लिए चार द्वार हैं। इसलिए अपने दिमाग में प्रवेश द्वार का निशान बना लें, नहीं तो आपको अपना सामान लेने के लिए प्रवेश बिंदु तक पहुंचने के लिए पूरा चक्कर लगाना पड़ सकता है।

मीनाक्षी अम्मन मंदिर तमिलनाडु के शहर मदुरई में वैगई नदी के दक्षिणी तट पर स्थित है, जिसका निर्माण वर्ष 1623 और 1655 के बीच किया गया था और इसकी अद्भुत वास्तुकला विश्व स्तर पर प्रसिद्ध है। मीनाक्षी मंदिर मुख्य रूप से पार्वती को समर्पित है, जिसे मीनाक्षी और उनके पति को सुंदरेश्वर (शिव) के

रूप में जाना जाता है। श्री मीनाक्षी अम्मन मंदिर द्रविड़ वास्तुकला को दर्शाता है। यह मंदिर अपने टावरों या 'गोपुरम' के लिए सबसे प्रसिद्ध है, बहुत दूर से भी दिखाई देते हैं। 14 एकड़ में फैला लगभग 12 गोपुरम ने मीनाक्षी मंदिर को सुशोभित किया, जिसमें चार बाहरी 160 फीट से अधिक की ऊँचाई पर थे।

मीनाक्षी मंदिर तमिलनाडु के कुछ ऐसे मंदिरों में से एक है जिसमें चार दिशाओं से चार प्रवेश द्वार हैं। इस मंदिर के भवन में लगभग हजार स्तंभ हैं। इस मंदिर के प्रदेश द्वार से लेकर खंभों तक सभी में विभिन्न देवताओं और देवी की छवियों को उकेरा गया है। इसमें 14 गेटवे टॉवर हैं, जिनकी ऊँचाई 450 मीटर है। उनमें से सबसे ऊँचा टॉवर दक्षिणी टॉवर है, जो 170 फीट की ऊँचाई पर है। सुंदरेश्वर मंदिर परिसर के भीतर चांदी से बनी भगवान शिव की नटराज के रूप में , एक विशाल प्रतिमा स्थापित है, जिसमें नटराज को दाहिना पैर उठा कर नाचते हुए दिखाया गया है और यह नटराज की बाकी छवि से बिलकुल अलग है क्योंकि बाकी में उनका बायां पैर उठा हुआ होता है।

बुजुर्गों, दिव्यांग जनों, महिलाओं (जिनके छोटे बच्चे हों) के लिए मंदिर में दर्शन की विशेष सुविधा उपलब्ध है।मंदिर के अंदर कई स्टॉल बनाये हुए हैं जहाँ से आप कई तरह के स्वादिष्ट पकवान का आनंद ले सकते हैं। मुझे मुख्य तौर पर मंदिर में मिलने वाला माल पुआ ज्यादा स्वादिष्ट लगा।

मदुरै में हमारा प्रवास दो दिनों के लिए था। अतः हम अगले दिन मदुरै से हुब्बल्ली के लिए रवाना हुए। चूंकि मदुरै से हुबली के लिए कोई सीधी ट्रेन नहीं थी, इसलिए मैंने मदुरै से बेंगलुरु और बेंगलुरु से हुबली तक अपना टिकट बुक किया था। इस यात्रा के मीठे और कुछ खट्टे अनुभव मेरे दिल और दिमाग में हमेशा ताज़ा रहेंगे।

शैलेन्द्र प्रजापति
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

लेखापरीक्षा प्रक्रिया और लेखापरीक्षकों पर प्रौद्योगिकी का प्रभाव

जैसे-जैसे दुनिया तेजी से प्रौद्योगिकी पर निर्भर होती जा रही है, लेखा परीक्षा भी इस तथ्य का अपवाद नहीं है। लेखा परीक्षा पर प्रौद्योगिकी का प्रभाव अभूतपूर्व होगा। एक्सेल, आईडिया, टेबल्यू आदि जैसे उपकरण लेखा परीक्षकों को बहुत सारी मैन्युअल प्रक्रिया को खत्म करने और लेखा परीक्षा को तेज, समृद्ध और तेजी से स्वचालित प्रक्रिया बनाने में मदद करते हैं। जानकारी प्राप्त करना, टंकित करना और डेटा का विश्लेषण करने जैसे कई कार्य जो पहले लेखा परीक्षकों द्वारा मैन्युअल रूप से किए जाते थे, अब स्वचालित हो रहे हैं। पहले के दिनों के विपरीत, जब लेखापरीक्षक ऑडिट किए जाने वाले डेटा/सूचना के लिए पूरी तरह से लेखापरीक्षिती संगठनों पर निर्भर रहते थे, प्रौद्योगिकी ने लेखापरीक्षकों को बहुत सारे डेटा/सूचना को ऑनलाइन पहुँच में सक्षम बना दिया है क्योंकि लेखापरीक्षिती संगठनों की ई-फ़ाइलों तक केवल पढ़ने के लिए पहुंच देना अनिवार्य है।

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग (आईएएंडएडी) अपनी प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी को एकीकृत करने के लिए लगातार भारी प्रयास कर रहा है और वे ई-ऑफिस जैसे विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफॉर्म लेकर आए हैं जिनका उपयोग सभी आंतरिक पत्राचार के लिए किया जा रहा है। OIOS IA&AD में एक नवीनतम विकास है जिसका उपयोग सभी प्रकार की रिपोर्ट प्रस्तुत करने और जारी करने के लिए किया जा रहा है, SAI पोर्टल जिसका उपयोग प्रशिक्षण संबंधी सभी गतिविधियों के लिए किया जा रहा है। लेखापरीक्षा रिपोर्ट अब किसी की भी पहुंच में है और प्रौद्योगिकी की मदद के बिना ऐसा नहीं हो पाता।

स्वचालन के माध्यम से प्रदान की गई लेखापरीक्षा की रणनीतियों और गुणवत्ता ने इसे लेखापरीक्षा प्रक्रिया का एक अनिवार्य हिस्सा बना दिया है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग लेखापरीक्षा प्रक्रिया में कई मैन्युअल प्रक्रियाओं को और स्वचालित कर देगा। प्रौद्योगिकी मानव लेखा परीक्षकों को बढ़ाती है और यह संबंध आने वाले वर्षों में लेखा परीक्षा प्रक्रिया के मानकों को फिर से परिभाषित करने के लिए तैयार है। हालाँकि, सच्चाई यह है कि लेखापरीक्षा प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी को अपनाने से पारंपरिक लेखापरीक्षा का अंत नहीं होगा बल्कि नई शुरुआत फिर से परिभाषित होगी।

टी.सुदर्शन रेड्डी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जीवन का सीख

एक राजा था जिसका नाम राम था | उनके जीवन में सभी सुख थे | राज्य का काम काज भी ऐशो आराम से चल रहे था | राजा के नैतिक गुणों के कारण प्रजा भी बहुत प्रसन्न थी | इतने सुखों के बाद भी राजा दुखी था क्यूंकि उसकी कोई संतान नहीं थी |

वर्षों के बाद उसे एक पुत्र की प्राप्ति हुई | पुरे नगर में कई दिनों तक जश्न मना | राज कुमार का नाम नंदनसिंह रखा गया | पूजा पाठ एवम इन्तजार के बाद राजा को सन्तान प्राप्त हुई थी इसलिये उसे बड़े लाड़ प्यार से रखा जाता था | लेकिन अति किसी बात की अच्छी नहीं होती अधिक लाड़ ने नंदन सिंह को बहुत बिगाड़ दिया था | नंदन बहुत ज्यादा जिद्दी हो गया था उसके मन में अहंकार आ गया था | नन्दन के इस व्यवहार से सभी बहुत दुखी थे | एक दिन राजा ने सभी खास दरबारियों एवम मंत्रियों की सभा बुलवाई और उनसे अपने दिल की बात कही कि वे राज कुमार के इस व्यवहार से अत्यंत दुखी हैं | मंत्री ने सुझाव दिया कि "राजकुमार को एक उचित मार्गदर्शन एवम सामान्य जीवन के अनुभव की जरुरत हैं| आप उन्हें गुरु राधागुप्त के आश्रम भेज दीजिये | सुना हैं, वहाँ से जानवर भी इंसान बनकर निकलता हैं |" यह बात राजा को पसंद आई और उसने नन्दन को गुरु जी के आश्रम भेजा|

गुरु जी ने राजा को आश्वस्त किया कि वे जब अपने पुत्र से मिलेंगे तब उन्हें गर्व महसूस होगा| अगले दिन सुबह गुरु के खास चेले द्वारा नंदन को भिक्षा मांग कर खाने को कहा गया जिसे सुनकर नंदन ने साफ़ इनकार कर दिया | नंदन ने अपनी अकड़ में चेले की बात नहीं मानी और शाम होते होते उसे भूख लगने लगी लेकिन उसे खाने को नहीं मिला | दुसरे दिन उसने भिक्षा मांगना शुरू किया | शुरुवात में उसके बोल के कारण उसे कोई भिक्षा नहीं देता था | धीरे-धीरे उसे मीठे बोल का महत्व समझ आने लगा और करीब एक महीने बाद नंदन को भर पेट भोजन मिला जिसके बाद उसके व्यवहार में बहुत से परिवर्तन आये |

एक दिन राधागुप्त जी ने नंदन को अपने साथ सुबह सवेरे सैर पर चलने कहा | दोनों चलते-चलते एक सुंदर बाग़ में पहुँच गये | जहाँ बहुत सुंदर-सुंदर फूल थे जिनसे बाग़ महक रहा था | गुरु जी ने नंदन को बाग़ से पूजा के लिये गुलाब के फुल तोड़ने कहा | नंदन झट से सुंदर-सुंदर गुलाब तोड़ लाया और अपने गुरु के सामने रख दिये | अब गुरु जी ने उसे नीम के पत्ते तोड़कर लाने कहा | नंदन वो भी ले आया | अब गुरु जी ने उसे एक गुलाब सूंघने दिया और कहा बताओ कैसा लगता हैं नंदन ने गुलाब सुंघा और गुलाब की बहुत तारीफ की | फिर गुरु जी उसे नीम के पत्ते चखकर उसके बारे में कहने को कहा | जैसे ही नंदन ने नीम के पत्ते खाये उसका मुंह कड़वा हो गया और उसने उसकी बहुत निंदा की | और जतर क़तर पीने का पानी ढूंढने लगा |

गुरु जी ने उससे कहा कि जब तुमने गुलाब का फुल सुंघा तो तुम्हे उसकी खुशबू बहुत अच्छी लगी और तुमने उसकी तारीफ की लेकिन जब तुमने नीम की पत्तियाँ खाई तो तुम्हे वो कड़वी लगी और तुमने उसे थूक दिया और उसकी निंदा भी की | गुरु जी से नन्दन को समझाया जिस प्रकार तुम्हे जो अच्छा लगता हैं तुम उसकी तारीफ करते हो उसी प्रकार प्रजा भी जिसमे गुण होते हैं उसकी प्रशंसा करती हैं |

नंदन को सभी बाते विस्तार से समझ आ जाती हैं और वो अपने महल लौट जाता हैं | नंदन में बहुत परिवर्तन आता हैं और वो बाद में एक सफल राजा बनता हैं |

पंपा बिस्वास
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

अंबोली

अंबोली महाराष्ट्र में स्थित एक छोटा-सा पहाड़ी क्षेत्र है। यह प्रसिद्ध पर्यटन स्थल सहयाद्रि पर्वतमाला में है, जो सिंधुदुर्ग ज़िले में आता है। सन 1880 में अंबोली को हिल स्टेशन का दर्जा प्रदान किया गया था। परिवार आदि के साथ यह स्थान छुट्टियाँ बिताने के लिए एक बेहतरीन जगह है। यहाँ का मौसम अधिकांशत: ठण्डा रहता है, इसीलिए यहाँ गर्मी के दिनों में आना ठीक रहता है।

वर्षा की फुहारों का आनन्द अगर किसी हिल स्टेशन पर लिया जाए, तो ये अनुभव अपने आप में ही अनूठा होता है। कुछ ऐसा ही एहसास दिलाने वाली जगह है 'अंबोली'। यह ख़ूबसूरत स्थान सिंधुदुर्ग ज़िले की सहयाद्रि पहाड़ियों की दक्षिणी श्रृंखला में स्थित है। इस स्थान के शानदार प्राकृतिक दृश्य किसी का भी मन मोह लेने की क्षमता रखते हैं। यहाँ कई ऐसे जगह हैं, जहाँ से हरे-भरे पर्वत और उपजाऊ धरती के मनोरम दृश्य का भरपूर आनंद लिया जा सकता है। अंबोली समस्त परिवार के साथ छुट्टियों आदि बिताने के लिए एकदम सही स्थान है।

अंबोली गांव में स्थित प्राचीन शिव मंदिर है, जिसे 'हिरन्याकेशी' भी कहा जाता है। यहाँ से एक जल की धारा निकलकर कृष्णा नदी में मिलती है। ये शिव मंदिर एक गुफ़ा में स्थित हैं और यहीं से ये धारा निकलती है। ऐसा माना जाता है कि यहाँ क़रीब 108 शिव मंदिर है, लेकिन इनमें से अभी तक कुछ ही उजागर हो पाए हैं। यहाँ आने वाले पर्यटक पिकनिक का मजा भी उठा सकते हैं। घने जंगलों और गहरी घाटियों के बीच से कोंकण तट का नज़ारा भी बहुत संदर दिखता है। इस हिल स्टेशन से 10 किलोमीटर की दूरी पर पर्यटक बाक्साइट की खान भी देख सकते है। अगर पर्यटक मछली पकड़ने के शौकीन हैं तो हिरन्याकेशी में घंटों इसका मजा ले सकते हैं। यहाँ माधवगढ़ किले के अवशेष भी देखे जा सकते हैं। अंबोली की मुख्य सड़क पर एक युद्ध स्मारक भी अवस्थित है।

क्योंकि अधिक ऊँचाई पर स्थित होने के कारण यहाँ का मौसम ठंडा रहता है, इसलिए गर्मियों में यहाँ आना अधिक अच्छा है। मानसून में यहाँ का तापमान 20 डिग्री सेन्टीग्रेट हो जाने से इस जगह पर रहना सुखद होता है। सर्दियों में भी यहाँ आना अच्छा रहेगा। मानसून के समय में यहाँ होने वाली अच्छी वर्षा से यहाँ मौजूद झरने और धुंध से यहाँ की प्राकृतिक छटा की सुंदरता कई गुना बढ़ जाती है। बारिश का मजा और कुछ दिनों के एकांत के लिए अंबोली एक शानदार सैरगाह है।

पीयूष पपनेजा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

चैट-जीपीटी (CHAT GPT)

परिचय:

Chat GPT "अनुवर्ती प्रश्नों" का उत्तर दे सकता है और "अपनी गलतियों को स्वीकार कर सकता है, गलत धारणाओं को चुनौती दे सकता है साथ ही अनुचित अनुरोधों को अस्वीकार कर सकता है।" यह कंपनी के GPT 3.5 सीरीज़ के लैंग्वेज लर्निंग मॉडल (LLM) पर आधारित है। GPT का मतलब जनरेटिव प्री-ट्रेन्ड ट्रांसफॉर्मर-3 है और यह एक तरह का कंप्यूटर लैंग्वेज मॉडल है जो इनपुट के आधार पर मानव-समान पाठ करने के लिये गहन शिक्षण तकनीकों पर निर्भर करता है। मॉडल को यह भविष्यवाणी करने के लिये प्रशिक्षित किया जाता है कि भविष्य में क्या होगा, और इसलिये तकनीकी रूप से Chat GPT के साथ 'बातचीत' की जा सकती है।

उपयोग:

- इसका उपयोग वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों जैसे डिजिटल मार्केटिंग, ऑनलाइन सामग्री निर्माण, ग्राहक सेवा प्रश्नों का उत्तर देने या यहाँ तक कि डीबग कोड में मदद करने के लिये भी किया जा सकता है।
- मानव जैसी बोलने की शैली की नकल करते हुए बॉट कई तरह के सवालों का जवाब दे सकता है।
- इसे बेसिक ईमेल, पार्टी प्लानिंग लिस्ट, सीवी और यहाँ तक कि कॉलेज निबंध और होमवर्क के प्रतिस्थापन के रूप में देखा जा रहा है।
- इसका उपयोग कोड लिखने के लिये भी किया जा सकता है।

सीमाएँ:

- उक्त चैटबॉट में भी लगभग सभी AI मॉडल की तरह नस्लीय और लैंगिक पूर्वाग्रह संबंधी समस्याएँ हैं।
- चैटबॉट के उत्तर व्याकरणिक रूप से सही होते हैं और इसकी पठन संबंधी समझ भी अच्छी है परंतु इसमें संदर्भ संबंधी समस्या है, जो काफी हद तक सच है।
- Chat GPT कभी-कभी गलत जानकारी देता है और इसका ज्ञान वर्ष 2021 से पहले हुई वैश्विक घटनाओं तक ही सीमित है।

Chat GPT की विशेषताएं

- Chat GTP की मुख्य विशेषता यह है कि आपके द्वारा जो सवाल पूछे जाते हैं उनका उत्तर आपको विस्तार से आर्टिकल के रूप में प्राप्त होता है।
- चैट जीपीटी की सहायता से निबंध, बायोग्राफी, एप्लीकेशन आदि लिखकर तैयार कर सकते हैं।
- चैट जीपीटी पर पूछा गया किसी भी सवाल का उत्तर रियल टाइम में प्राप्त किया जा सकता है।
- इस पर उपलब्ध सुविधा का इस्तेमाल करने के लिए यूजर को कोई पैसे नहीं देने होंगे। क्योंकि ChatGPT पर उपलब्ध की गई सुविधा का लाभ मुफ्त में उठाया जा सकता है।
- आने वाले समय में लोग अलग-अलग भाषाओं में इसका उपयोग कर सकेंगे।

CHAT GPT के फायदे

- चैट जीपीटी का सबसे बड़ा फायदा यह है कि जब यूजर इस पर कुछ भी सर्च करता है तो उस सवाल का जवाब बिल्कुल विस्तार से प्राप्त होता है। यानी कि यूजर को अपने सवाल की पूरी जानकारी हासिल हो जाती है। जब
  भी हम गूगल पर कुछ सर्च करते हैं तो गूगल हमारे द्वारा सर्च किए गए सवाल से संबंधित अलग-अलग वेबसाइट दिखाता है लेकिन चैट जीपीटी पर ऐसा नहीं है। यह आपको सीधा ही पूछे गए सवाल का जवाब देता है।
- अगर आप चैट जीपीटी में दी गई जानकारी से संतुष्ट नहीं होते तो आप इसकी जानकारी भी चैट जीपीटी को दे सकते हैं। जिससे चैट जीपीटी अपने रिजल्ट में अपडेट करके डेटा दोबारा से दिखाता है। और उसके द्वारा लगातार रिजल्ट को अपडेट किया जाता रहता है।
- यूजर को चैट जीपीटी का उपयोग करने के लिए एक पैसा भी नहीं देना होगा। यूजर्स फ्री में इसका इस्तेमाल कर सकते हैं।

Chat GPT के नुकसान

- चैट जीपीटी अभी केवल अंग्रेजी भाषा को ही समझ पा रहा है। इसलिए जो लोग अंग्रेजी भाषा जानते हैं उनके लिए ही यह उपयोगी साबित होगा। हालांकि आने वाले समय में Chat GPT में अन्य भाषाओं को भी शामिल किया जाएगा।
- ऐसे बहुत से सवाल है जिसका सटीक जवाब आपको चैट जीपीटी नहीं दे सकता है।
- Chat GPT ट्रेनिंग साल 2022 में ही पूरी हो गई है इसलिए मार्च 2022 के बाद ही अधिकांश घटनाओं की जानकारी शायद आपको यहां पर नही मिल सकेगी।
- यूजर्स इसका इस्तेमाल फ्री में तब तक ही कर सकते हैं जब तक यह रिसर्च पीरियड में है। रिसर्च पीरियड पूरा हो जाने के बाद यूजर को इसका इस्तेमाल करने के लिए पैसे देने की जरूरत होगी हालांकि कितने पैसे देने होंगे इसके बारे में अभी कोई जानकारी नहीं दी गई है।

क्या चैट जीपीटी Google को पीछे छोड़ देगा

चैट जीपीटी के द्वारा वर्तमान समय में गूगल को पीछे नहीं छोड़ा जा सकता है। क्योंकि वर्तमान समय में जीपीटी के पास केवल सीमित जानकारी ही उपलब्ध है। और इस पर ज्यादा ऑप्शन भी उपलब्ध नहीं है। Chat GPT Open AI द्वारा निर्मित किया गया एक शक्तिशाली भाषा मॉडल है। लेकिन इसे Google को बदलने या खत्म करने के लिए लांच नहीं किया गया है। दोनों ही अलग-अलग उद्देश्य की पूर्ति करते हैं और उनके अद्वितीय फायदे हैं। Google और Chat GPT का उपयोग विभिन्न उद्देश्यों और उद्योगों के लिए किया जाता है। सामान्य जानकारी को प्राप्त करने के लिए गूगल का व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाता है जबकि चैट जीपीटी का उपयोग चैट बोट और आभासी सहायकों के लिए किया जाता है। चैट जीपीटी के द्वारा उतने ही सवालों के जवाब दिए जा सकते हैं जितने जवाब देने के लिए उसे ट्रेन किया गया है। वहीं गूगल के पास दुनिया भर के अलग-अलग वेब पेजों का एक व्यापक डेटाबेस मौजूद है। आपको गूगल पर विभिन्न प्रकार की जानकारी, ऑडियो, वीडियो, फोटो तथा शब्द से प्राप्त हो जाती है।

शुभम गौड़

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

शिक्षा की पहचान

शिक्षा सरोवर का रस पीने वाला है सर्वोतम,
इसको ग्रहण करने वाला बन जाता है उत्तम,

गुरुजानो की शिक्षा की बात है जिसने मानी,
इसके रस को पीने वाला बन जाता है ज्ञानी,

शिक्षा के मध्यम से आज पहूँचे हम चाँद पर,
इसके जरीये बनाया गया कुश्ती मैदान सागर पर,

औषधि, जल, हवा, खतरनाक गैसों का बोध कराती,
स्वस्थ, अच्छा खाना, कसरत करने का पाठ पढाती,

कभी ख्वाब देखते थे हम आसमान में उड़ने का,
आज ज्ञान से दम रखते हैं हम मंगल पर रहने का,

ये कभी ना ख़तम होने वाली है हमारी धरोहर,
डॉक्टर, इंजीनियर, उद्योगपति ये हैं इसकी मोहर,

शिक्षा दृढ़ संकल्प, समर्पण, त्याग करना सिखाती है,
जीवन में क्या गलत क्या सही का पाठ पढ़ाती है,

आओ करें संकल्प अपने को ज्ञानी बनाएंगे,
अपने भारत को सोने की चिड़िया सा चमकायेंगे ।

रागिनी सिंह
लेखापरीक्षक

सच्चा प्रेम या स्वार्थ।

मां बाप का इकलौता बेटा। बेटे में बचपन से ही देशप्रेम की भावना खूब थी। बड़ा होकर बेटा सेना में भर्ती हुआ। सेना में जाने के कुछ महीनो बाद ही बेटे को दूसरे देश से छिड़े युद्ध के लिए बॉर्डर पर जाना **पड़ा**।युद्ध पर जाने के कई दिनो तक और बाद में कुछ महीनो तक भी मां बाप को बेटे की कोई तार,फोन या खबर नही मिली। मां बाप बेटे का इंतजार करते रहे और भगवान से प्रार्थना करते रहे की उनके बेटे को सही सलामत घर वापस लाए। एक दिन अचानक उनके फोन की रिंग बजी और दूसरी तरफ से उनके बेटे की आवाज आई। मां बाप की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने बेटे का हालचाल पूछा। बेटे ने थोड़ी देर उनसे बात करने के बाद कहां की वो उनसे किसी बात की इजाजत मांगना चाहता है। मां बाप ने कहा बोलो बेटा क्या बात है?

बेटे ने कहां की वो घर वापस आ रहा है लेकिन अपने एक दोस्त को भी साथ ला रहा है। मां बाप ने कहां .. हा हा लेकर आओ उसे भी। बेटे ने कहां पहले पूरी बात तो सून लीजिए। वो दोस्त मेरे साथ सेना में ही है और वो अब हमेशा हमारे साथ रहेगा! मां बाप ने थोड़ा सोचने के बाद कहां .. ठीक है बेटा ले आओ अपने दोस्त को रहेगा हमारे साथ परिवार की तरह। बेटा बोला... अरे आप दोनो मेरी पूरी बात क्यों नहीं सुनते? ये जो मेरा दोस्त है इसका एक हाथ और एक पैर नही है! युद्ध के समय बॉम्ब ब्लास्ट से इसका एक हाथ और एक पैर टूट गया। अब मैं इसे अपने घर लाना चाहता हूं और यह अब हमेशा के लिए हमारे साथ रहेगा और हमें इसकी काफी देखभाल भी करनी पड़ेगी।

बेटे के यह शब्द सुनकर मां-बाप पूरी तरह से शांत हो गए। थोड़ी देर की शांति के बाद मां बाप ने बेटे से कहा.. अरे बेटा क्यों झंझट मॉल लेते हो? उस बेचारे को उसकी हालत पर छोड़ दो। वह एक बोझ से बढ़कर कुछ नहीं होगा!

मां बाप का कहना अभी पूरा भी नहीं हुआ था कि बेटे ने फोन कट कर दिया। मां बाप इधर बेटे की राह देखते रहे, दिन बीते, हफ्ते बीते, कुछ महीने बीत गए लेकिन ना बेटा आया ना बेटे की खबर। पर एक दिन उनके घर पर एक आर्मी का आदमी आया और उन्हें बताया कि उनके बेटे ने आत्महत्या कर ली है! इसलिए वह आकर उसकी लाश ले जाए।

मां बाप के पैरों तले जैसे जमीन फिसल गई। दोनों अपने आप को संभालते जैसे-तैसे अपने बेटे के शव के पास पहुंचे। जब उन्होंने अपने बेटे की लाश को देखा तो उन्हें और भी ज्यादा बड़ा झटका लगा क्योंकि उनके बेटे का एक हाथ और एक पैर नहीं था!

अब उन्हें बहुत पछतावा हुआ। अगर वह उस दिन फोन पर अपने बेटे को उसके दोस्त को लाने के लिए हां कह देते तो आज उनका बेटा उनके पास होता और जिंदा भी। बेटा दरअसल अपने दोस्त का बहाना करके यह जानना चाहता था की कही वह अपने मां-बाप के लिए दुख का कारण न बन जाए और उसे जब यह पता चला तो उसने मां-बाप के पास लौटने से अच्छा दुनिया से अलविदा लेना सही समझा।

शिक्षा :- ***दोस्तों दुनिया ऐसी ही है दुनिया आपको तभी प्यार करती है,आपका तभी महत्त्व मानती है जब आप उनके कुछ काम आ सकते हो। दुनिया रिश्तो में मतलब ढूंढती है। लेकिन फिर भी बेटे ने जो कदम उठाया वह कतई सही नहीं था। किसी भी हालत में हमें जिंदगी से हार नहीं माननी चाहिए।***

विपिन कुमार
लेखापरीक्षक

दृष्टिकोण

एक बार दो भाई, रोहित और मोहित थे। वे नौवीं कक्षा के छात्र थे और एक ही स्कूल में पढ़ते थे। उनकी ही कक्षा में अमित नाम का एक छात्र और था जो बहुत अमीर परिवार से था।

एक दिन अमित अपने जन्मदिन पर बहुत महंगी घड़ी पहन कर स्कूल आया, सभी उसे देख कर बहुत चकित थे। हर कोई उस घड़ी के बारे में बातें कर रहा था, कि तभी किसी ने अमित से पुछा, मित्र, तुमनें ये घड़ी कहाँ से ली ? "अमित बोला, मेरे भैया ने मुझे जन्मदिन पर ये घड़ी उपहार स्वरुप दी है ।"

यह सुनकर सभी उसके भैया की तारीफ़ करने लगे , हर कोइ यही सोच रहा था कि काश उनका भी ऐसा कोई भाई होता। मोहित भी कुछ ऐसा ही सोच रहा था, उसने रोहित से कहा, " काश हमारा भी कोई ऐसा भाई होता !"

पर रोहित की सोच अलग थी, उसने कहा, " काश मैं भी ऐसा बड़ा भाई बन पाता !"

वर्ष गुजरने लगे। धीरे - धीरे, मोहित अपनी जरूरतों के लिए दूसरों पर निर्भर रहने लगा क्योंकि उसने खुद को इस प्रकार विकसित किया और रोहित ने मेहनत की और एक सफल आदमी बन गया , क्योंकि वह दूसरों से कभी कोई उम्मीद नहीं रखता था , बल्कि औरों की मदद करने के लिए हमेशा तैयार रहता था।

तो फिर अंतर कहाँ था? वे एक ही परिवार से थे। वे एक ही वातावरण में पले-बढे और एक ही प्रकार की शिक्षा प्राप्त की। अंतर उनके दृष्टिकोण में था। हमारी सफलता और विफलता हमारे दृष्टिकोण पर काफी हद तक निर्भर करती है। और इसका प्रमाण आस-पास देखने पर आपको दिख जाएगा। चूँकि ज्यादातर लोग मोहित की तरह ही सोचते हैं इसलिए दुनिया में ऐसे लोगों की ही अधिकता है जो एक औसतन जिंदगी जी रहे हैं। वहीँ, रोहित की तरह सोच रखने वाले लोग कम ही होते हैं इसलिए समाज में भी सफल जिंदगी जीने वाले लोग सीमित हैं। अतः हमें हमेशा सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए पूरी कोशिश करनी चाहिए और नकारात्मकता से बचना चाहिए। क्योंकि वो हमारा दृष्टिकोण ही है जो हमारे जीवन को परिभाषित करता है और हमारे भविष्य को निर्धारित करता है।

टी. वेंकट रथनैय्या

लेखापरीक्षक

आशावादी कविता

तू रह आशावादी सदा
तू कर निराशा को खुद से जुदा
नहीं है कुछ मुश्किल जग में
ये बात रखना तू सदा अपने मन में ।।

होगा वही जो तू चाहेगा
पूरा विश्व तेरी वाह वाह गाएगा
नहीं है कुछ मुश्किल जग में
ये बात रखना तू सदा अपने मन में ।।

तू हर मोड़ पर चुनौतियों से टकराएगा
पर रह कर आशावादी तू पुनः संभल जाएगा मंजिलें सभी होंगी तेरे बस में
नहीं है कुछ मुश्किल जग में
ये बात रखना तू सदा अपने मन में ।

सफलता की सीढियों पर तू स्वतः ही चढ़ जाएगा
जब होगी तेरे भीतर आशा तू असफलता से नहीं घबराएगा
बस रख याद कि
नहीं है कुछ मुश्किल जग में
ये बात रखना तू सदा अपने मन में ।।

म.मनु
लेखापरीक्षक

विश्वासघातक वृक्ष

बहुत समय पहले की बात है, एक छोटे से गांव में एक बड़ा ही पुराना वृक्ष खड़ा था। यह वृक्ष गांव के लोगों के बीच बहुत प्रिय था क्योंकि उसकी छाया बच्चों को खेलने और लोगों को आराम करने का स्थान प्रदान करती थी। वृक्ष के पास एक छोटी सी झील भी थी, जो गांव के लोगों का मनोरंजन करती थी।

गांव में एक बड़ी दुखी औरत रहती थी जिनका नाम राधा था। उसके पास बच्चे नहीं थे और वह हमेशा दूसरों के सुख में ही खो जाती थी। रोज़ वह वृक्ष के नीचे आकर बिताती थी और उसके साथ बातें करती थी। वह विश्वास करती थी कि वृक्ष उसके मित्र है और उसकी मदद करेगा।

एक दिन, गांव के एक अमीर व्यापारी ने यह सुनकर कि वृक्ष के लकड़ी काफी महंगे होते हैं, उसे काट दिया। राधा बिना किसी सूचना के वृक्ष के पास आई और देखकर हैरान रह गई। वृक्ष अब उसके सामने सिर्फ एक कटा हुआ स्थल था, जिसमें बस एक टुकड़ा पेड़ छोड़ा गया था।

राधा का दिल टूट गया, और वह विचलित होकर बोली, "वृक्ष, तुमने मुझे क्यों धोखा दिया? मैंने तुम पर विश्वास किया था और तुमने मुझे धोखा दिया।"

वृक्ष ने प्यार भरे आवाज़ में कहा, "राधा, मैंने तुम्हारा विश्वास तोड़ा नहीं है। मैंने तुम्हें सबसे मूल्यवान चीज़ छोड़ दी है - अपना दिल। अब मैं एक छोटा सा पेड़ बन गया हूँ, लेकिन मेरा प्यार और समर्पण तब भी वैसा ही है।"

राधा अपनी गलती समझते हुए रो पड़ी और वृक्ष के पास आकर उसके नीचे बैठ गई। वह समझ गई कि विश्वास और सच्चे मित्री की महत्वपूर्णता क्या होती है।

इसके बाद से, राधा ने गांव के लोगों को यह सिखाया कि मानव-प्रेम और सच्चे दोस्ती का मूल्य अत्यधिक होता है। वृक्ष की छाया और उसका साथ अब भी गांव के लोगों को सुख-शांति देता था, बिना किसी उलझन के।

इस कहानी से हमें यह सिख मिलती है कि विश्वास और सच्चे मित्री का मूल्य अत्यधिक होता है, और हमें दूसरों के साथ सही तरीके से व्यवहार करना चाहिए।

पंकज ढुल
लेखापरीक्षक

असफलता से भी सीखने की कोशिश

शेखर स्नातक अंतिम वर्ष का छात्र हैं और प्रतियोगिता परीक्षाओं की तयारी कर रहा है, उसके दादाजी प्राथमिक स्कूल से रिटायर्ड शिक्षक हैं।शेखर ने अपने दादाजी से यह सवाल पूछा - सभी अपने जीवन में आगे बढ़ना चाहते हैं, लेकिन बहुत कम लोग ही अपने लक्ष्य तक पहुंच पाते हैं। अगर अपने लक्ष्य तक पहुंचना है तो क्या करना चाहिए। उन्होंने शेखर का सवाल सुनने के बाद कहा - अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए व्यक्ति को सबसे पहले खुद को असफलताओं को स्वीकार करने के लिए तैयार करना चाहिए।

दादाजी का जवाब सुनने के बाद शेखर ने पूछा - मैं आपकी बात समझ नहीं पाया। आखिर अपने आप को असफलता के लिए तैयार कर सफलता कैसे पायी जा सकती है।

शेखर का सवाल सुनने के बाद दादाजी ने कहा - इस बात को मैं तुम्हारा ही उदाहरण देकर समझता हूँ।तुम इस समय प्रतियोगिता परीक्षाओं की तयारी कर रहे हो। तुम अगले वर्ष होने वाली परीक्षाओं में बैठोगे। तुम यही सोचकर बैठोगे कि तुम्हें सफलता मिलेगी।

दादाजी की बात पर शेखर ने हाँ में सिर हिलाया।इसके बाद दादाजी जी ने कहा - मान लो तुम अपने पहले प्रयास में असफल हो जाते हो तो तुम क्या करोगे?

शेखर ने कहा - मुझे बहुत निराशा होगी। मैं तैयारी में अपनी तरफ से कही कमी नहीं छोड़ रहा हूँ। दादाजी ने कहा - निराशा ही असफलता की जड़ है।वह कैसे, शेखर ने सवाल किया। दादाजी बोले तुम्हें लगता है कि तुम्हारी तैयारी मुकम्मल है लेकिन परीक्षा तो दूसरे की इच्छा पर निर्भर है।

अगर तुम पहले प्रयास में असफल होने के बाद निराश हो जाते हो तो तुम्हारी आगे की तैयारी प्रभावित होगी।अगर तुम असफलता को अपनी कमियों को दुरस्त करने का मौका मानोगे तभी आगे की तैयारी में उन्हें दूर कर पाओगे।हर परीक्षार्थी यही सोचता है कि उसकी तैयारी पूरी है, लेकिन सफलता कुछ लोगों को ही मिलती है।ये वही लोग होते हैं जो अपनी असफलता से सीखते हैं ही और दूसरों की असफलता से भी सीखने की कोशिश करते हैं।

बी. ब्रिजिता
कनिष्ठ अनुवादक

हिन्दी दिवस 14 सितम्बर 2023

स्मृति परीक्षा 2023

हिन्दी पखवाड़ा समारोह -2022

राजभाषा

हिन्दी

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय

दक्षिण पश्चिम रेलवे हुब्बल्ली

580023 (कर्नाटक)